IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# 'भारत में उद्यम पूंजी कम्पनियों के सम्मुख आने वाली चुनौतियों पर एक अध्ययन'

**धर्मेन्द्र सिंह[1]**
**शोध छात्र**
**वाणिज्य विभाग**
**दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यायल,**
**गोरखपुर – 273009**

**दिव्याँश राय[2]**
**शोध छात्र**
**वाणिज्य विभाग**
**दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यायल,**
**गोरखपुर – 273009**

**सरांश**

उधम पूंजी की अवधारणा बड़ी परियोजनाओं को शुरू करने के लिए बड़ी मात्रा में वित्तपोषण से सम्बन्धित है। उधम पूँजी वह पूँजी होती है, जिसके द्वारा कम्पनियों को समता या ऋण प्रतिभूतियों में निवेश किया जाता हैं। उधम पूँजी उच्च जोखिम उच्च जोखिम एंव उच्च आय अर्जन वाली परियोजनाओं के उत्पादों के वित्तीयन का स्रोत है। उधम पूँजीपति जागरूक निवेशक होते है, जो उच्च आय की संगठित प्रत्याशा में उच्च जोखिम का सामना करने के लिए तत्पर होते है तथा नई परियोजनाएँ प्रारम्भ करते है। उनका सिद्वान्त होता है कि अधिक जोखिम होने पर अधिक लाभ होता है उधम पूँजी परियोजना की सफलता परियोजनाओं के मूल्यांकन तथा निवेश एवं प्रवर्तकों की क्षमता पर निर्भर करता है। उधम पूँजीपति एक व्यक्ति या एक कम्पनी है जो निवेश पूँजी बौद्धिक प्रबन्धन विशेषज्ञता प्रदान करता है जबकि उत्पादों के साथ–साथ सेवाओं के अत्यधिक नवीन और भावी क्षेत्रों को वित्तपोषति करता है। भारत में वर्तमान में कई संस्थान है जो उधम पूंजी वित्त प्रदान करते है। भारत में जोखिम पूंजी को प्रोत्साहित करने की तत्काल आवश्यकता है क्योंकि यह उच्च तकनीकि उद्योंगों के औधोगिक आधार को विस्तृत करेगा और प्रौद्योगिकी के विकास को बढ़ावा देगां। यह शोध पत्र का उद्देश्य वित्त पोषण करते समय भारतीय उधम पूंजी कम्पनियों के सामने आने वाले मुद्दों और चुनौतियों अध्ययन करना है।

**परिचय :—**

उधम पूंजी, उधम पूंजीपतियों द्वारा प्रदान किये गए वित्त को संदर्भित करता है जो अपेक्षाकृत नई तेजी से वृद्वि करने वाली कंपनियों या स्टार्टअप में निवेश करते है जो अत्यधिक लाभदायक उपक्रम और तेजी से विकास करने की क्षमता रखते हो। उधम पूंजीपति उच्च वृद्वि दर और उच्च जोखिम, निवेश पर उच्च वापसी दर है। इसलिए यह नये विचारों वाजे उधमियों के लिए वित्त के महत्वपूर्ण स्रोंतो के रूप में कार्य करते है। सेवी (उधम पूँजी कोष) के अनुसार उपक्रम पूँजी कोष का आशय विनियमों के अधीन नियमित निकाय को सम्मिलित करते हुए एक ट्रस्ट या कम्पनी के रूप में स्थापित तथा इन विनियमों के अधीन पंजीकृत कोष से है जिसके पास पूँजी का सममिंत भण्डार हो, जिसने विनियमों में निर्दिष्ट विधि से पूँजी प्राप्त की हो तथा जो विनियमों के अनुकूल उपक्रम पूँजी उधम में निवेश करता हो। एक उधम पूँजीपति एक व्यक्ति या एक कम्पनी है जो निवेश पूँजी बौद्धिक प्रबन्धन विशेषज्ञता, नेटवर्किंग और विपणन सहायता प्रदान करता है, जबकि उत्पादों के साथ—साथ सेवाओं के साथ अत्यधिक अभिनव और भावी क्षेत्रों को वित्त पोषण और संचालन करता है। इस प्रकार नई और तेजी से वृद्धि करने वाली परियोजनाओं, उधमों या कम्पनियों को खरीदना, निवेश पर उच्च जोखिम एवं उच्च वापसी दर की उम्मीद करना समय की एक लंबी सीमा के बाद सामान्य रूप से 5 से 6 वर्ष अधिक समय तक उत्पाद के विपणन और पदोन्नति सेवा प्राप्त करने योग्य उधम पूँजीपतियों द्वारा किए गए निवेश में शामिल है।

❖ **अध्ययन का महत्व :—**

उधम पूंजी संस्थानों को ऐसी उधम पूंजी संस्थाओं की सहायता से व्यवहार्थ परियोजनाओं में अपने ज्ञान एवं कौशल का आदान प्रदान करने देते है। यह आधुनिक तकनीकि के साथ नये उत्पादों को व्यावसायिक रूप से व्यवहार बनाने में मदद करता है यह विदेशी मुद्रा आर्पित करने के लिए निर्यात उन्मुज इकाईयों को बढ़ावा देता है। इसने वित्तीय संस्थान प्रदान नही किए बल्कि प्रबन्धन तकनीकी और अन्य लोगों को भी सहायता प्रदान की। यह पूँजी बाजार को मजबूत करता है। जो न केवल उधार चिंता को सुधारता है बल्कि एक ऐसी स्थिति भी पैदा करता है जिससे वे पूंजी बाजार के माध्यम से अपनी पूंजी जुटा सकते है। यह उस प्रक्रिया के माध्यम से आधुनिक तकनीकि को बढ़ावा देता है जहाँ वित्तीय संस्थान नई तकनीकि के साथ व्यावसायिक उपक्रमों को प्रोत्साहित करते है कई बीमार कंपनियों को ऐसे उधम पूंजी सस्थानों से उचित उपचार प्राप्त करने के बाद वह उपक्रम वित्तीय से तकनीकि रूप से, बौद्धिक रूप से सुद्रण हो जाता है।

❖ **अध्ययन का उद्देश्य :—**

वित्तपोषण करते समय भारतीय उधम पूंजी कम्पनियों के सम्मुख आने वाले मुद्दो और चुनौतियों अध्ययन करना।

❖ **उधम पूंजी वित्तपोषण के लिए प्रक्रिया :—**

उधम पूंजी का आरम्भ तकनीकि रूप से मूलभूत वैश्विक प्रतिस्पर्धा एवं आर्थिक रूप से सक्षम परियोजनाओं को निधि प्रदान करने से होती है। यह निधि उनको प्रदान की जाती है जो उच्चतम गुणवत्ता एवं उचित लागत पर कार्य करती है। दक्षिण पूर्वी एशियन अथव्यवस्था मुख्य रूप से हांगकांग,सिगांपुर मलेशिया और भारत एक मजबूत उधम पूंजीपति के रूप में उभरा है उधम पंतीपति अपनी निधि को संगठित जनता की निधि से करते है अथवा कुछ निजी पूँजीपतियों से लेकर किया जाता है। एक समता पूंजी और दूसरा ऋण पूंजी तो कि एक अर्ध सुरक्षित निवेश है यदि आज की बात करें तो एक उधम पूंजीपति सौदा करता है। आम समता परिवर्तनीय पूर्वाधिकार समता और मातहत ऋणपूंजी में।

1. **पूर्व बीज अवस्था** :—

इस स्तर पर पूंजी की छोटी राशि सपने देखने और बेहतर भविष्य की संभावनाओं वाले संभावित बाजार के लिए एक उधमी को प्रदान की जाती है। वित्त पोषित कार्य में कुछ हद तक उत्पाद विकास भी शामिल है।

2. **बीज अवस्था** :—

इस प्रकार का वित्तपोषण उत्पाद विकास को पूरा करने और प्रारंभिक विपणन रणनीतियों को शुरू करने के लिए प्रदान किया जाता है।

3. **प्रथम अवस्था** :—

कंपनियों को वाणिज्यिक विनिर्माण और बिक्री शुरू करने के लिए वित्त प्रदान किया जाता है।

4. **द्वितीय अवस्था** :—

बढ़ते हुए पूंजीगत प्राप्य की सूची में कम्पनी के विस्तार के लिए वित्तपोषण कार्यशील पूंजी के दूसरे चरण में दी जाती है।

5. **तीसरी अवस्था** :—

बिक्री की मात्रा बढ़ाने वाली कम्पनी के प्रमुख विस्तार के लिए प्रदान की गई धनराशि। यह चरण तब पूरा होता है जब फर्म ब्रेक इवन प्वाइंट से भी आगे निकल जाता है।

6. **बाद में मंत वित्तपोषण** :—

बाद के चरण का वित्त पोषण किसी कम्पनी को उसके आरंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव से ठीक पहले वित्त पोषण कर रहा है। अक्सर पूल वित्त को संरचित किया जाता है ताकि इसे सार्वजनिक पेशकश की आय से प्राप्त किया जा सकें।

उधम के वित्त पोषण में साधारणताः चार प्रमुख तत्व होते है जिसका गहन अध्ययन उधम पूंजीपतियों द्वारा किया जाता है जो नीचे निम्न है

❖ **उच्च—प्रवन्धन** :—

बोर्ड प्रमुख लोगों की ताकत, विशेषज्ञता और कम्पनी या उधम में एकता होने से कम्पनी में महत्वपूर्ण विश्वसनीयता लाती है। उधम के (कम्पनी) के सदस्यों को परिपक्क, कम्पनी के कारोबार के ज्ञान का अनुभव होना चाहिए और उधम निवेश पर उच्च जोखिम वाले संभावित उच्च जोखिम लेने में सक्षम होना चाहिए।

❖ **यथार्थवादी वित्तीय आवश्यता और अनुमान** :—

संगठन की वर्तमान वित्तीय स्थिति के साथ—साथ प्रकृति और भविष्य के अनुमान के पैमाने के सन्दर्भ में कम्पनी का प्रदर्शन संचालन परिचालन लाभ और इससे संबंधित आगे की लागत, उत्पाद विकास अनुसंधान और विकास के माध्यम से उधम पूंजीपति को इसके बारे में यथार्थवादी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

## ❖ पूंजी लाभ की अपेक्षा:–

उधम पूंजीपतियों द्वारा लगभग 30% से 40% की वापसी की औसत दर की आवश्यकता होती है। निवेश पर वापसी दर व्यापार चक्र के चरण पर भी निर्भर करती है जहाँ धन निवेश किया जा रहा है।

## ❖ निजी वित्त :–

व्यवसाय में उधमी/मालिक द्वारा स्वामित्व वाले वित्तीय संसाधन जिसमें परिवार, दोस्तो और रिश्तेदारों द्वारा निवेश किये गये धन शामिल है। यह एक महत्वपूर्ण एवेन्यू है जहाँ उधम पूंजीपति एक खुली नजर रखता है।

## ❖ उधम पूंजी वित्तपोषण में समस्याएं एवं मुद्दे :–

भारत में उधम पूंजी वित्तपोषण अपनी प्रारम्भिक अवस्था है। उभरते वैशिवक प्रतिस्पर्धा के वातारण ने औद्योगिक क्षेत्र पर अत्यधिक दबाव डाला है ताकि वह अपनी गुणवत्ता पर कार्य करे साथ ही साथ लागत को निम्नतम करें। नवीन और उन्नत तकनीकी का प्रयोग करके। उपर्युक्त कही गयी बिन्दुओं का उद्देश्य उचित वित्तपोषण का उच्च तकनीकी के साथ प्रबन्ध करना है ताकि अभिन उत्पाद को उत्पादित किया जा सके ताकि वर्तमान बाजार स्थिति में वह सफल हो सके लेकिन दुर्भाग से भारत तकनीकी और निधि दोनो में ही पीछे है।

1. एक अनुभवी प्रबन्धकीय टीम की आवश्यकता।
2. निवेश पर प्रतिफल की उच्च दर की आवश्यकता।
3. प्रत्यावर्तन अवाधी सामान्य रूप से लम्बी है।
4. बाजार में उत्पाद की सफलता के बारे में अनिश्चिता।
5. उत्पादन के बुनियादी ढ़ाँचे के विवरण, संयत्र की स्थिति, पहुँच आपूर्तिकर्ताओं और लेनदारों के साथ सम्बन्ध परिवहन सुविधाओं, श्रम उलब्धता आदि के बारे में समस्याएँ और मुद्दा।
6. उत्पादों और सेवा की पेशकश के सम्बन्ध में संभावित ग्राहकों की श्रेणी।
7. बाजार का आकार।
8. प्रमुख प्रतिद्वंदियों और उनकी बाजार में हिस्सेदारी।
9. कौशल और प्रशिक्षण की आवश्यकता और प्रशिक्षण की लागत।
10. नियोजित पूंजी पर वापसी जैसे वित्तीय विचार आर0ओ0सी0ई0 परियोजना की लागत आन्तरिक दर वापसी (आई0आर0आर0) परियोना की कुल धनराशि आवश्यक है मालिकों के निवेश का अनुपात (कृत्रिम निधियों का उधमी) उधार ली गई पूंजी, बन्धक ऋृण आदि को नियोजित पूंजी में।

## ❖ भारत में उधम पूंजी निधि की विशेषताएँ :–

उधम पूंजी की सबसे अधिक परिभाषा में पाये जाने वाले प्रमुख शब्द, उच्च प्रौद्योगित लाभ मूल्यवर्धन के माध्यम से प्रबन्धन में हिस्सेदारी।

❖ **उच्च जोखिमः–**

उच्च जोखिम से परिभाषा उधम पूॅजी वित्तपोषण अत्यधिक जोखिम भरा है और विफलता की संभावना अधिक होती है क्योंकि यह उच्च जोखिम उच्च जोखिम वाले फ्रैक्चर को पीर्धकालिक पूॅजी प्रदान करता है। उधम पूंजी चार प्रकार के जोखिम को मानती है –

1. एक साथ काम करने के लिए प्रबन्धन टीमों की प्रबन्धन जोखिम अक्षमता।
2. बजार जोखिम – उत्पाद बाजार में विफल हो सकता है।
3. उत्पाद जोखिम– उत्पाद व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य नहीं हो सकता है।
4. परिचालन जोखिम– परिचालन लागत प्रभावी नहीं हो सकती है जिसके परिणामस्वरूप लागत में वृद्धि हुई है और सकल मार्जिन में कमी आयी है।

**निष्कर्ष :–**

दुनिया के बाजार अधिक से अधिक प्रतिस्पर्धी होते जा रहे है। प्रतिस्पर्धी कंपनियों पर प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त हासिल करने के लिए उचित लागत, श्रम दक्षता, तकनीकी कौशल विभिन्न उपभोक्ता माँग, अनुकूलनशीलता और दूरदर्शिता के संबन्ध में कम्पनियों को सुपर कुशल होना आवश्यक है। उनकी अत्यधिक लागत प्रभावी गुणवत्ता वाले उत्पादों और इसलिए नई परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए आवश्यक धन के साथ मार्गदर्शन और निगरानी के लिए मूल्यवान मानव पूॅजी तक सही पहुॅच की आवश्यकता है। आज भारत उधम पूंजी के वित्तपोषण को नई परियोजनाओं नये–नये विचारों को बढ़ावा दे रहा है। पूंजीपतियों को कर लाभ प्रदान करने वाले कराधान नियमों का उदारीकरण कर रहा है। अर्थव्यवस्था के बड़े क्षेत्र है जो उधम पूंजी निवेशकों के लिए परिपक्क है जैसे सूचना प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, फार्मा विनिर्माण उधोग और अन्य उधोग, भारतीय औद्योगिक अवसंरचना में मौजूदा समस्याओं के बावजूद भारत में तेजी से उधम पूंजी वित्तपोषण व्यवसाय के लिए राष्ट्र इंतजार कर रहे है।

**सन्दर्भः–**


1. Viren Chandra. An overview on venture capital financing in india, research hub- international multidisciplinary research Journal. 2014; (2) :2349-7637.
2. Jagono Ambrose venture Capital (VC) the all-important MSMES finance strategy Under reglsct in Kenya, international Journal of business and social science- 2012; 3(21): 234-240.
3. IM Pandey- Venture Capital Development Prvess in india, technovation, Vol.18,1998.
4. Kisan Kumar shetty (2017), A Comparative study on impact of venture Capital financing on startups in india. International Comfernce on educationa, Humanities and management (ICEHM-17) March 14-15, 2017 Dubai (UAE), http,// heaig, org/images/proceedings- pdf/iaho 317513, pdf.
5. IM Pandey-venture Capital : The India Experience, New Delhi : Prentice Hall, 1996.
6. E, Gorden & Dr, K. Natarajan (2015) financial markets and Services.
7. www.rvcf.org/

8. www.ifciventure.com/
9. Rustagi RP (2001) 'financial management- Theory, Concept and Problems :-
10. G.. SILAMBARSAN and Dr. R. JAGANNATHAN (2017) PEREFORMANCE EVALUATION OF SELECT VENTURE CAPITAL IN TAMILNADU.
11. N.P. SRINIVASAN (2003) " AN ASSESSMENT OF VENTURE CAPITAL FINANCING IN INDIA" CA study with Reference to selected Venture capital fund and assisted Units)

IJCRT